॥ श्रीहरिः ॥ 1094

हिन्दी भावार्थसहित

श्रीहनुमानचालीसा

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

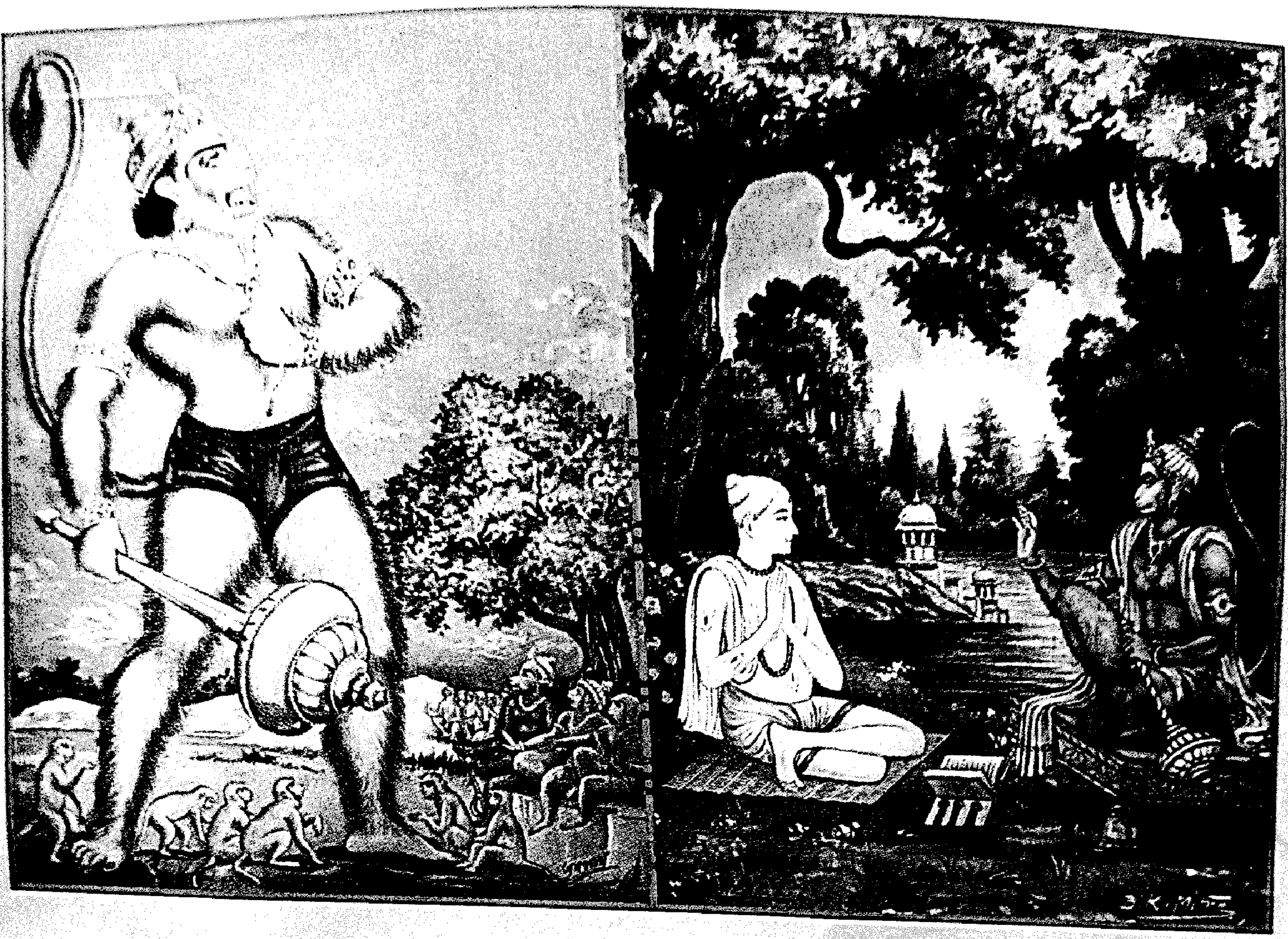

॥ श्रीहरिः ॥ 1094

श्रीहनुमानचालीसा

(हिन्दी भावार्थसहित)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

संवत् २०८० चालीसवाँ पुनर्मुद्रण ५०,०००
कुल मुद्रण १९,५०,०००

❖ मूल्य— ₹ 7
(सात रुपये)

कूरियर/डाकसे मँगवानेके लिये
गीताप्रेस, गोरखपुर—273005
www.gitapress.org
gitapressbookshop.in

प्रकाशक एवं मुद्रक—
गीताप्रेस, गोरखपुर
(गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान)
मो० नं० : +91-8188054403, 8188054408
web : gitapress.org e-mail : booksales@gitapress.org

॥ श्रीहरि: ॥

निवेदन

'अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ॥'

'अतुल बलके धाम, सोनेके पर्वत (सुमेरु)-के समान कान्तियुक्त शरीरवाले, दैत्यरूपी वन [-को ध्वंस करने]-के लिये अग्निरूप, ज्ञानियोंमें अग्रगण्य, सम्पूर्ण गुणोंके निधान, वानरोंके स्वामी, श्रीरघुनाथजीके प्रिय भक्त पवनपुत्र श्रीहनुमान्‌जीको मैं प्रणाम करता हूँ।'

पिछले कई वर्षोंसे भक्तजनोंकी यह इच्छा थी कि श्रीहनुमानचालीसाका व्याख्यासहित भावार्थ प्रकाशित किया जाय। वास्तवमें श्रीहनुमानचालीसा परम आराध्य श्रीमारुतनन्दनकी महिमाका संक्षेपमें गुणगान है। इसकी भाषा इतनी सरल है कि यह सबके लिये बोधगम्य है, फिर भी भक्तजनोंके इच्छानुसार व्याख्यासहित इसका भावार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

कहते हैं कि जो कार्य औषधिसे नहीं होता वह आशीर्वादसे हो जाता है। श्रीहनुमानचालीसा

औषधि और आशीर्वाद दोनों है। औषधिमें जड़ी-बूटी है और रसायन भी है। इसीलिये यह सर्वोपयोगी है। इसके पाठसे लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकारकी सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। संसारमें जितने भी प्रकारके कठिन-से-कठिन कार्य हैं, वे श्रीहनुमान्‌जीकी कृपासे सहज हो जाते हैं—**'दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥'** इसके साथ ही जीवनका परम फल जन्म-जन्मान्तरके पापोंसे निवृत्ति, भगवत्प्राप्ति तथा अन्तकालमें सालोक्य मुक्ति अर्थात् साकेत धामकी प्राप्ति होती है—**'तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥ अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥'** यह सब कपोलकल्पित नहीं है। इसके साक्षी गौरीपति भगवान् सदाशिव शंकर स्वयं हैं—**'जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥'**

इस प्रकार श्रीहनुमानचालीसाका पाठ करनेसे एक साथ समस्त वस्तुएँ सरलता और सुगमतासे प्राप्त हो जाती हैं। भाषा और आकारकी दृष्टिसे यह अत्यन्त सरल एवं लघु है तथा देशके करोड़ों-करोड़ स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, धनी-निर्धन, अल्पज्ञ-विद्वान्—सबकी दैनिक आराधनाका प्रथम सोपान भी है। आशा है भक्तजन इससे लाभान्वित होंगे।

—राधेश्याम खेमका

॥ श्रीहनूमते नमः ॥

श्रीहनुमानचालीसा

दोहा—**श्रीगुरु चरन सरोज रज**
निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि॥ १॥ (क)

भावार्थ—श्रीगुरुदेवके चरण-कमलोंकी धूलिसे अपने मनरूपी दर्पणको निर्मल करके मैं श्रीरघुवरके उस सुन्दर यशका वर्णन करता हूँ जो चारों फल (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष)-को प्रदान करनेवाला है।

व्याख्या—मनरूपी दर्पणमें शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धरूपी विषयोंकी पाँच पर्तोंवाली जो काई (मैल) चढ़ी हुई है वह साधारण रजसे साफ होनेवाली नहीं है। अतः इसे

स्वच्छ करनेके लिये '**श्रीगुरु चरन सरोज रज**'-की आवश्यकता पड़ती है। साक्षात् भगवान् शंकर ही यहाँ गुरुस्वरूपमें वर्णित हैं—'**गुरुं शङ्कररूपिणम्।**' भगवान् शंकरकी कृपासे ही रघुवरके सुयशका वर्णन करना सम्भव है।

दोहा—बुद्धिहीन तनु जानिके
सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं
हरहु कलेस बिकार॥ १॥ (ख)

भावार्थ—हे पवनकुमार! मैं अपनेको शरीर और बुद्धिसे हीन जानकर आपका स्मरण (ध्यान) कर रहा हूँ। आप मुझे बल, बुद्धि और विद्या प्रदान करके मेरे समस्त **कष्टों** और दोषोंको दूर करनेकी कृपा कीजिये।

व्याख्या—मैं अपनेको देही न मानकर देह मान बैठा हूँ, इस कारण बुद्धिहीन हूँ और **पाँचों प्रकारके क्लेश** (अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश) *तथा*

षड्विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर)-से संतप्त हूँ; अतः आप-जैसे सामर्थ्यवान् **'अतुलितबलधामम्' 'ज्ञानिनामग्रगण्यम्'** से बल, बुद्धि एवं विद्याकी याचना करता हूँ तथा समस्त क्लेशों एवं विकारोंसे मुक्ति पाना चाहता हूँ।

चौपाई—**जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।**
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ १॥

भावार्थ—ज्ञान और गुणोंके सागर श्रीहनुमान्‌जीकी जय हो। तीनों लोकों (स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक)-को अपनी कीर्तिसे प्रकाशित करनेवाले कपीश्वर श्रीहनुमान्‌जीकी जय हो।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी कपिरूपमें साक्षात् शिवके अवतार हैं, इसलिये यहाँ इन्हें कपीश कहा गया।

यहाँ हनुमान्‌जीके स्वरूपकी तुलना सागरसे की गयी। सागरकी दो विशेषताएँ हैं—एक तो सागरसे भण्डारका तात्पर्य है और दूसरा सभी वस्तुओंकी उसमें परिसमाप्ति

होती है। श्रीहनुमन्तलालजी भी ज्ञानके भण्डार हैं और उनमें समस्त गुण समाहित हैं। किसी विशिष्ट व्यक्तिका ही जय-जयकार किया जाता है। श्रीहनुमान्‌जी ज्ञानियोंमें अग्रगण्य, सकल गुणोंके निधान तथा तीनों लोकोंको प्रकाशित करनेवाले हैं, अतः यहाँ उनका जय-जयकार किया गया है।

राम दूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ २॥

भावार्थ—हे अतुलित बलके भण्डारघर रामदूत हनुमान्‌जी! आप लोकमें अंजनी-पुत्र और पवनसुतके नामसे विख्यात हैं।

व्याख्या—सामान्यतः जब किसीसे कोई कार्य सिद्ध करना हो तो उसके सुपरिचित, इष्ट अथवा पूज्यका नाम लेकर उससे मिलनेपर कार्यकी सिद्धि होनेमें देर नहीं लगती। अतः यहाँ श्रीहनुमान्‌जीको प्रसन्न करनेके लिये भगवान् श्रीराम, माता अंजनी तथा पिता पवनदेवका नाम लिया गया।

महावीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी॥ ३॥

भावार्थ—हे महावीर! आप वज्रके समान अंगवाले और अनन्त पराक्रमी हैं। आप कुमति (दुर्बुद्धि) का निवारण करनेवाले हैं तथा सद्बुद्धि धारण करनेवालोंके संगी (साथी, सहायक) हैं।

व्याख्या—किसीको अपनी ओर आकर्षित करनेके लिये सर्वप्रथम उसके गुणोंका वर्णन करना चाहिये। अतः यहाँ हनुमान्‌जीके गुणोंका वर्णन है। श्रीहनुमन्तलालजी त्याग, दया, विद्या, दान तथा युद्ध—इन पाँच प्रकारके वीरतापूर्ण कार्योंमें विशिष्ट स्थान रखते हैं, इस कारण ये महावीर हैं। अत्यन्त पराक्रमी और अजेय होनेके कारण आप विक्रम और बजरंगी हैं। प्राणिमात्रके परम हितैषी होनेके कारण उन्हें विपत्तिसे बचानेके लिये उनकी कुमतिको दूर करते हैं तथा जो सुमति हैं, उनके आप सहायक हैं।

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा॥ ४॥

भावार्थ—आपके स्वर्णके समान कान्तिमान् अंगपर सुन्दर वेश-भूषा, कानोंमें कुण्डल और घुँघराले केश सुशोभित हो रहे हैं।

व्याख्या—इस चौपाईमें श्रीहनुमन्तलालजीके सुन्दर स्वरूपका वर्णन हुआ है। आपकी देह स्वर्ण-शैलकी आभाके सदृश सुन्दर है और कानमें कुण्डल सुशोभित है। उपर्युक्त दोनों वस्तुओंसे तथा घुँघराले बालोंसे आप अत्यन्त सुन्दर लगते हैं।

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै॥ ५॥

भावार्थ—आपके हाथमें वज्र (वज्रके समान कठोर गदा) और (धर्मका प्रतीक) ध्वजा विराजमान है तथा कंधेपर मूँजका जनेऊ सुशोभित है।

व्याख्या—सामुद्रिक शास्त्रके अनुसार वज्र एवं ध्वजाका चिह्न सर्वसमर्थ महानुभाव एवं सर्वत्र विजयश्री प्राप्त करनेवालेके हाथमें होता है और कन्धेपर मूँजका जनेऊ नैष्ठिक ब्रह्मचारीका लक्षण है। श्रीहनुमान्‌जी इन सभी लक्षणोंसे सम्पन्न हैं।

संकर सुवन केसरीनंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन॥ ६॥

भावार्थ—आप भगवान् शंकरके अंश (अवतार) और केशरीपुत्रके नामसे विख्यात हैं। आप (अतिशय) तेजस्वी, महान् प्रतापी और समस्त जगत्‌के वन्दनीय हैं।

व्याख्या—प्राणिमात्रके लिये तेजकी उपासना सर्वोत्कृष्ट है। तेजसे ही जीवन है। अन्तकालमें देहाकाशसे तेज ही निकलकर महाकाशमें विलीन हो जाता है।

बिद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर॥ ७॥

भावार्थ—आप सारी विद्याओंसे सम्पन्न, गुणवान् और अत्यन्त चतुर हैं।

आप भगवान् श्रीरामका कार्य (संसारके कल्याणका कार्य) पूर्ण करनेके लिये तत्पर (उत्सुक) रहते हैं।

व्याख्या—श्रीहनुमन्तलालजी समग्र विद्याओंमें निष्णात हैं और समस्त गुणोंको धारण करनेसे 'सकलगुणनिधान' हैं। वे श्रीरामके कार्य-सम्पादन-हेतु अत्यन्त आतुरता (तत्परता, व्याकुलता)-का भाव रखनेवाले हैं। क्योंकि **'राम काज लगि तव अवतारा'** यही उद्घोषित करता है कि श्रीहनुमान्‌जीके जन्मका मूल हेतु मात्र भगवान् श्रीरामके हित-कार्योंका सम्पादन ही है।

ब्रह्मकी दो शक्तियाँ हैं—पहली स्थित्यात्मक और दूसरी गत्यात्मक। श्रीहनुमन्तलालजी गत्यात्मक क्रियाशक्ति हैं अर्थात् निरन्तर रामकाजमें संनद्ध रहते हैं।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया॥ ८॥

भावार्थ—आप प्रभु श्रीराघवेन्द्रका चरित्र (उनकी पवित्र मंगलमयी कथा)

सुननेके लिये सदा लालायित और उत्सुक (कथारसके आनन्दमें निमग्न) रहते हैं। श्रीराम, लक्ष्मण और माता सीताजी सदा आपके हृदयमें विराजमान रहते हैं।

व्याख्या—**'राम लखन सीता मन बसिया'**—इसका दूसरा अर्थ यह भी है कि भगवान् श्रीराम, श्रीलक्ष्मणजी एवं भगवती सीताजीके हृदयमें आप बसते हैं।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा॥ ९॥

भावार्थ—आपने अत्यन्त लघु रूप धारण करके माता सीताजीको दिखाया और अत्यन्त विकराल रूप धारण कर लंका नगरीको जलाया।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी अष्टसिद्धियोंसे सम्पन्न हैं। उनमें सूक्ष्मातिसूक्ष्म एवं अति विस्तीर्ण दोनों रूपोंको धारण करनेकी विशेष क्षमता विद्यमान है। वे शिव (ब्रह्म)-का अंश होनेके कारण तथा अत्यन्त सूक्ष्म रूप धारण करनेसे अविज्ञेय भी हैं—

'सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयम्' साथ ही काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अहंकार, दम्भ आदि भयावह एवं विकराल दुर्गुणोंसे युक्त लंकाको विशेष पराक्रम एवं विकट रूपसे ही भस्मसात् किया जाना सम्भव था। अत: श्रीहनुमान्‌जीने दूसरी परिस्थितिमें विराट् रूप धारण किया।

भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे॥ १० ॥

भावार्थ—आपने अत्यन्त विशाल और भयानक रूप धारण करके राक्षसोंका संहार किया और विविध प्रकारसे भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके कार्योंको पूरा किया।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी परब्रह्म रामकी क्रियाशक्ति हैं। अत: उसी शक्तिके द्वारा उन्होंने भयंकर रूप धारण करके असुरोंका संहार किया। भगवान् श्रीरामके कार्यमें लेशमात्र भी अपूर्णता श्रीहनुमान्‌जीके लिये सहनीय नहीं थी तभी तो **'राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहाँ बिश्राम'** का भाव अपने हृदयमें सतत सँजोये हुए वे प्रभु श्रीरामके कार्य सँवारनेमें सदा क्रियाशील रहते थे।

लाय सजीवन लखन जियाये।
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥ ११ ॥

भावार्थ—आपने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मणजीको जिलाया। इस कार्यसे प्रसन्न होकर भगवान् श्रीरामने आपको हृदयसे लगा लिया।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जीको उनकी स्तुतिमें श्रीलक्ष्मण-प्राणदाता भी कहा गया है। श्रीसुषेण वैद्यके परामर्शके अनुसार आप द्रोणाचल पर्वतपर गये, अनेक व्यवधानों एवं कष्टोंके बाद भी समयके भीतर ही संजीवनी बूटी लाकर श्रीलक्ष्मणजीके प्राणोंकी रक्षा की। विशेष स्नेह और प्रसन्नताके कारण ही किसीको हृदयसे लगाया जाता है।

अंशकी पूर्ण परिणति अंशीसे मिलनेपर ही होती है, जिसे श्रीहनुमन्तलालजीने चरितार्थ किया।

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ १२ ॥

भावार्थ—भगवान् श्रीराघवेन्द्रने आपकी बड़ी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि तुम भाई भरतके समान ही मेरे प्रिय हो।

व्याख्या—श्रीरामचन्द्रजीने हनुमान्‌जीके प्रति अपनी प्रियताकी तुलना भरतके प्रति अपनी प्रीतिसे करके हनुमान्‌जीको विशेषरूपसे महिमामण्डित किया है। भरतके समान रामका प्रिय कोई नहीं है; क्योंकि समस्त जगत्‌द्वारा आराधित श्रीराम स्वयं भरतका जप करते हैं—

भरत सरिस को राम सनेही।
जगु जप राम रामु जप जेही॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ १३॥

भावार्थ—हजार मुखवाले श्रीशेषजी सदा तुम्हारे यशका गान करते रहेंगे—ऐसा कहकर लक्ष्मीपति विष्णुस्वरूप भगवान् श्रीरामने आपको अपने हृदयसे लगा लिया।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जीकी चतुर्दिक् प्रशंसा हजारों मुखोंसे होती रहे—ऐसा कहते हुए भगवान् श्रीरामजीने श्रीहनुमान्‌जीको कण्ठसे लगा लिया।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा॥ १४॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥ १५॥

भावार्थ—श्रीसनक, सनातन, सनन्दन, सनत्कुमार आदि मुनिगण, ब्रह्मा आदि देवगण, नारद, सरस्वती, शेषनाग, यमराज, कुबेर तथा समस्त दिक्पाल भी जब आपका यश कहनेमें असमर्थ हैं तो फिर (सांसारिक) विद्वान् तथा कवि उसे कैसे कह सकते हैं? अर्थात् आपका यश अवर्णनीय है।

व्याख्या—उपमाके द्वारा किसी वस्तुका आंशिक ज्ञान हो सकता है, पूर्ण ज्ञान

नहीं। कवि-कोविद उपमाका ही आश्रय लिया करते हैं।

श्रीहनुमान्‌जीकी महिमा अनिर्वचनीय है। अत: वाणीके द्वारा उसका वर्णन करना सम्भव नहीं।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६ ॥

भावार्थ—आपने वानरराज सुग्रीवका महान् उपकार किया तथा उन्हें भगवान् श्रीरामसे मिलाकर [बालिवधके उपरान्त] राजपद प्राप्त करा दिया।

व्याख्या—राजपदपर सुकण्ठकी ही स्थिति है और उसका ही कण्ठ सुकण्ठ है जिसके कण्ठपर सदैव श्रीरामनामका वास हो। यह कार्य श्रीहनुमान्‌जीकी कृपासे ही सम्भव है।

सुग्रीव बालिके भयसे व्याकुल रहता था और उसका सर्वस्व हरण कर लिया गया था। भगवान् श्रीरामने उसका गया हुआ राज्य वापस दिलवा दिया तथा उसे भयरहित कर दिया। श्रीहनुमान्‌जीने ही सुग्रीवकी मित्रता भगवान् रामसे करायी।

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना।
लंकेस्वर भए सब जग जाना॥ १७ ॥

भावार्थ—आपके परम मन्त्र (परामर्श)-को विभीषणने ग्रहण किया। इसके कारण वे लंकाके राजा बन गये। इस बातको सारा संसार जानता है।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी महाराजने श्रीविभीषणजीको शरणागत होनेका मन्त्र दिया था, जिसके फलस्वरूप वे लंकाके राजा हो गये।

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८ ॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! [जन्मके समय ही] आपने दो हजार योजनकी दूरीपर स्थित सूर्यको [कोई] मीठा फल समझकर निगल लिया था।

व्याख्या— श्रीहनुमान्‌जीको जन्मसे ही आठों सिद्धियाँ प्राप्त थीं। वे जितना

ऊँचा चाहें उड़ सकते थे, जितना छोटा या बड़ा शरीर बनाना चाहें बना सकते थे तथा मनुष्यरूप अथवा वानररूप धारण करनेकी उनमें क्षमता थी।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥ १९॥

भावार्थ—आप अपने स्वामी श्रीरामचन्द्रजीकी मुद्रिका [अँगूठी]-को मुखमें रखकर [सौ योजन विस्तृत] महासमुद्रको लाँघ गये थे। [आपकी अपार महिमाको देखते हुए] इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं है।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी महाराजको समस्त सिद्धियाँ प्राप्त हैं तथा उनके हृदयमें प्रभु विराजमान हैं, इसलिये समस्त शक्तियाँ भी आपके साथ रहेंगी ही। इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २०॥

भावार्थ—हे महाप्रभु हनुमान्‌जी! संसारके जितने भी कठिन कार्य हैं वे सब आपकी कृपामात्रसे सरल हो जाते हैं।

व्याख्या—संसारमें रहकर मोक्ष (जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्ति) प्राप्त करना ही दुर्गम कार्य है, जो आपकी कृपासे सुलभ है।

आपका अनुग्रह न होनेपर सुगम कार्य भी दुर्गम प्रतीत होता है, परंतु सरल साधनसे जीवपर श्रीहनुमान्‌जीकी कृपा शीघ्र हो जाती है।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ २१॥

भावार्थ—भगवान् श्रीरामचन्द्रजीके द्वारके रखवाले (द्वारपाल) आप ही हैं। आपकी आज्ञाके बिना उनके दरबारमें किसीका प्रवेश नहीं हो सकता (अर्थात् भगवान् रामकी कृपा और भक्ति प्राप्त करनेके लिये आपकी कृपा बहुत आवश्यक है)।

व्याख्या—संसारमें मनुष्यके लिये चार पुरुषार्थ हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।

भगवान्‌के दरबारमें बड़ी भीड़ न हो इसके लिये भक्तोंके तीन पुरुषार्थको हनुमान्‌जी द्वारपर ही पूरा कर देते हैं। अन्तिम पुरुषार्थ मोक्षकी प्राप्तिके अधिकारी श्रीहनुमन्तलालजीकी अनुमतिसे भगवान्‌का सान्निध्य पाते हैं।

मुक्तिके चार प्रकार हैं—सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य एवं सायुज्य। यहाँ प्रायः सालोक्यमुक्तिसे अभिप्राय है।

सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रच्छक काहू को डर ना॥ २२॥

भावार्थ—आपकी शरणमें आये हुए भक्तको सभी सुख प्राप्त हो जाते हैं। आप जिसके रक्षक हैं उसे किसी भी व्यक्ति या वस्तुका भय नहीं रहता है।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी महाराजकी शरण लेनेपर सभी प्रकारके दैहिक, दैविक, भौतिक भय समाप्त हो जाते हैं तथा तीनों प्रकारके—आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक सुख सुलभ हो जाते हैं।

आप सुखनिधान हैं तथा सभी सुख आपकी कृपासे सुलभ हैं। यहाँ सभी सुखका तात्पर्य आत्यन्तिक सुख तथा परम सुखसे है। परमात्मप्रभुकी शरणमें जानेपर सदैवके लिये दुःखोंसे छुटकारा मिल जाता है तथा शाश्वत शान्ति प्राप्त होती है।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक तें काँपै॥ २३॥

भावार्थ—अपने तेज [शक्ति, पराक्रम, प्रभाव, पौरुष और बल]-के वेगको स्वयं आप ही सँभाल सकते हैं। आपके एक हुंकारमात्रसे तीनों लोक काँप उठते हैं।

व्याख्या—देवता, दानव और मनुष्य—तीनों ही आपके तेजको सहन करनेमें असमर्थ हैं। आपकी भयंकर गर्जनासे तीनों लोक काँपने लगते हैं।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै॥ २४॥

भावार्थ—भूत-पिशाच आदि आपका 'महावीर' नाम सुनते ही (नामोच्चारण करनेवालेके) समीप नहीं आते हैं।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जीका नाम लेनेमात्रसे भूत-पिशाच भाग जाते हैं तथा भूत-प्रेत आदिकी बाधा मनुष्यके पास भी नहीं आ सकती। श्रीहनुमान्‌जीका नाम लेते ही सारे भय दूर हो जाते हैं।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ २५॥

भावार्थ—वीर हनुमान्‌जीका निरन्तर जप करनेसे वे रोगोंका नाश करते हैं तथा सभी पीड़ाओंका हरण करते हैं।

व्याख्या—रोगके नाशके लिये बहुत-से साधन एवं औषधियाँ हैं। यहाँ रोगका मुख्य तात्पर्य भवरोगसे तथा पीड़ाका तीनों तापों (दैहिक, दैविक, भौतिक)-से है जिसका शमन श्रीहनुमान्‌जीके स्मरणमात्रसे होता है।

श्रीहनुमान्‌जीके स्मरणसे निरोगता तथा निर्द्वन्द्वता प्राप्त होती है।

संकट तें हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ २६॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! यदि कोई मन, कर्म और वाणीद्वारा आपका (सच्चे हृदयसे) ध्यान करे तो निश्चय ही आप उसे सारे संकटोंसे छुटकारा दिला देते हैं।

व्याख्या—जो मनसे सोचते हैं वही वाणीसे बोलते हैं तथा वही कर्म करते हैं—ऐसे महात्मागणको हनुमान्‌जी संकटसे छुड़ाते हैं। जो मनमें कुछ सोचते हैं, वाणीसे कुछ दूसरी बात बोलते हैं तथा कर्म कुछ और करते हैं, वे दुरात्मा हैं। वे संकटसे नहीं छूटते।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७॥

भावार्थ—तपस्वी राम सारे संसारके राजा हैं। [ऐसे सर्वसमर्थ] प्रभुके समस्त कार्योंको आपने ही पूरा किया।

व्याख्या—'**पिताँ दीन्ह मोहि कानन राजू**' के अनुसार श्रीरामचन्द्रजी वनके राजा हैं और मुनिवेशमें हैं। वनमें श्रीहनुमान्‌जी ही रामके निकटतम अनुचर हैं। इस कारण समस्त कार्योंको सुन्दर ढंगसे सम्पादन करनेका श्रेय उन्हींको है।

और मनोरथ जो कोइ लावै।
सोइ अमित जीवन फल पावै॥ २८॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! आपके पास कोई किसी प्रकारका भी मनोरथ [धन, पुत्र, यश आदिकी कामना] लेकर आता है, (उसकी) वह कामना पूरी होती है। इसके साथ ही '**अमित जीवन फल**' अर्थात् भक्ति भी उसे प्राप्त होती है।

व्याख्या—गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीकी 'कवितावली' में '**अमित जीवन फल**' का वर्णन इस प्रकार है—

सियराम-सरूपु अगाध अनूप बिलोचन-मीननको जलु है।
श्रुति रामकथा, मुख रामको नामु, हिएँ पुनि रामहिको थलु है॥

मति रामहि सों, गति रामहि सों, रति रामसों, रामहि को बलु है।
सबकी न कहै, तुलसीके मतें इतनो जग जीवनको फलु है॥

श्रीसीतारामजीके चरणोंमें प्रीति और भक्ति प्राप्त हो जाय यही जीवनफल है। यह प्रदान करनेकी क्षमता श्रीहनुमान्‌जीमें ही है।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ २९॥

भावार्थ—हे हनुमान्‌जी! चारों युगों (सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग)-में आपका प्रताप जगत्‌को सदैव प्रकाशित करता चला आया है—ऐसा लोकमें प्रसिद्ध है।

व्याख्या—मनुष्यके जीवनमें प्रतिदिन-रात्रिमें चारों युग आते-जाते रहते हैं। इसकी अनुभूति श्रीहनुमान्‌जीके द्वारा ही होती है। अथवा जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति एवं तुरीय—चारों अवस्थाओंमें भी आप ही द्रष्टारूपसे सदैव उपस्थित रहते हैं।

साधु संत के तुम रखवारे।
असुर निकंदन राम दुलारे॥ ३० ॥

भावार्थ—आप साधु-संतकी रक्षा करनेवाले हैं, राक्षसोंका संहार करनेवाले हैं और श्रीरामजीके अति प्रिय हैं।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जी महाराज रामके दुलारे हैं। तात्पर्य यह है कि कोई बात प्रभुसे मनवानी हो तो श्रीहनुमान्‌जीकी आराधना करें।

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता।
अस बर दीन जानकी माता॥ ३१ ॥

भावार्थ—माता जानकीने आपको वरदान दिया है कि आप आठों प्रकारकी सिद्धियाँ (अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व) और नवों प्रकारकी निधियाँ (पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील,

खर्व) प्रदान करनेमें समर्थ होंगे।

व्याख्या—रुद्रावतार होनेके कारण समस्त प्रकारकी सिद्धियाँ एवं निधियाँ श्रीहनुमान्‌जीको जन्मसे ही प्राप्त थीं। उन सिद्धियों एवं निधियोंको दूसरोंको प्रदान करनेकी शक्ति माँ जानकीके आशीर्वादसे प्राप्त हुई।

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२ ॥

भावार्थ—अनन्त कालसे आप भगवान् श्रीरामके दास हैं। अतः रामनामरूपी रसायन (भवरोगकी अमोघ औषधि) सदा आपके पास रहती है।

व्याख्या—कोई औषधि सिद्ध करनेके बाद ही रसायन बन पाती है। उसके सिद्धिकी पुनः आवश्यकता नहीं पड़ती, तत्काल उपयोगमें लायी जा सकती है और फलदायक सिद्ध हो सकती है। अतः रामनाम रसायन हो चुका है, इसकी सिद्धिकी कोई आवश्यकता नहीं है। सेवन करनेसे सद्यः फल प्राप्त होगा।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै॥ ३३ ॥

भावार्थ—आपके भजनसे लोग श्रीरामको प्राप्त कर लेते हैं और अपने जन्म-जन्मान्तरके दुःखोंको भूल जाते हैं अर्थात् उन दुःखोंसे उन्हें मुक्ति मिल जाती है।

व्याख्या—भजनका मुख्य तात्पर्य यहाँ सेवासे है। सेवा दो प्रकारकी होती है—पहली सकाम, दूसरी निष्काम। प्रभुको प्राप्त करनेके लिये निष्काम और निःस्वार्थ सेवाकी आवश्यकता है जैसा कि श्रीहनुमान्‌जी करते चले आ रहे हैं। अतः श्रीरामकी हनुमान्‌जी-जैसी सेवासे यहाँ संकेत है।

अंत काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ ३४ ॥

भावार्थ—अन्त समयमें मृत्यु होनेपर वह भक्त प्रभुके परमधाम (साकेत-धाम) जायगा और यदि उसे जन्म लेना पड़ा तो उसकी प्रसिद्धि हरिभक्तके रूपमें हो जायगी।

व्याख्या—भजन अथवा सेवाका परम फल है हरिभक्तिकी प्राप्ति। यदि भक्तको पुनः जन्म लेना पड़ा तो अवध आदि तीर्थोंमें जन्म लेकर प्रभुका परम भक्त बन जाता है।

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई॥ ३५ ॥

भावार्थ—आपकी इस महिमाको जान लेनेके बाद कोई भी प्राणी किसी अन्य देवताको हृदयमें धारण न करते हुए भी आपकी सेवासे ही जीवनका सभी सुख प्राप्त कर लेता है।

व्याख्या—श्रीहनुमान्‌जीसे अष्टसिद्धि और नवनिधिके अतिरिक्त मोक्ष या भक्ति भी प्राप्त की जा सकती है। इस कारण इस मानव-जीवनकी अल्पायुमें बहुत जगह न भटकनेकी बात कही गयी है। ऐसा दिशा-निर्देश किया गया है जहाँसे चारों पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) प्राप्त किये जा सकते हैं।

यहाँ सर्वसुखका तात्पर्य आत्यन्तिक सुखसे है जो श्रीमारुतनन्दनके द्वारा ही मिल सकता है।

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ ३६॥

भावार्थ—जो प्राणी वीरश्रेष्ठ श्रीहनुमान्‌जीका हृदयसे स्मरण करता है, उसके सभी संकट दूर हो जाते हैं और सभी प्रकारकी पीड़ाएँ समाप्त हो जाती हैं।

व्याख्या—जन्म-मरण-यातनाका अन्त अर्थात् भवबन्धनसे छुटकारा परमात्म-प्रभु ही करा सकते हैं। भगवान् श्रीहनुमान्‌जीके वशमें हैं। अतः श्रीहनुमान्‌जी सम्पूर्ण संकट और पीड़ाओंको दूर करते हुए जन्म-मरणके बन्धनसे मुक्त करानेमें पूर्ण समर्थ हैं।

जै जै जै हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं॥ ३७॥

भावार्थ—हे हनुमान् स्वामिन्! आपकी जय हो! जय हो!! जय हो!!! आप श्रीगुरुदेवकी भाँति मेरे ऊपर कृपा कीजिये।

व्याख्या—गुरुदेव जैसे शिष्यकी धृष्टता आदिका ध्यान नहीं रखते और उसके

कल्याणमें ही लगे रहते हैं [जैसे काकभुशुण्डिके गुरु], उसी प्रकार आप भी मेरे ऊपर गुरुदेवकी ही भाँति कृपा करें—'प्रभु मेरे अवगुन चित न धरो।'

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बंदि महा सुख होई॥ ३८॥

भावार्थ—जो इस (हनुमानचालीसा) का सौ बार पाठ करता है, वह सारे बन्धनों और कष्टोंसे छुटकारा पा जाता है और उसे महान् सुख (परमपद लाभ) की प्राप्ति होती है।

व्याख्या—श्रीहनुमानचालीसाके पाठकी फलश्रुति इस तथा अगली चौपाईमें बतलायी गयी है। संसारमें किसी प्रकारके बन्धनसे मुक्त होनेके लिये प्रतिदिन सौ पाठ तथा दशांशरूपमें ग्यारह पाठ, इस प्रकार एक सौ ग्यारह पाठ करना चाहिये। इससे व्यक्ति राघवेन्द्र प्रभुके सामीप्यका लाभ उठाकर अनन्त सुख प्राप्त करता है।

जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९॥

भावार्थ—जो व्यक्ति इस हनुमानचालीसाका पाठ करेगा उसे निश्चित रूपसे सिद्धियों [लौकिक एवं पारलौकिक]-की प्राप्ति होगी, भगवान् शंकर इसके स्वयं साक्षी हैं।

व्याख्या—श्रीशंकरजीके साक्षी होनेका तात्पर्य यह है कि भगवान् श्रीसदाशिवकी प्रेरणासे ही श्रीतुलसीदासजीने श्रीहनुमानचालीसाकी रचना की। अतः इसे भगवान् शंकरका पूर्ण आशीर्वाद प्राप्त है। इसलिये यह श्रीहनुमान्‌जीकी सिद्ध स्तुति है।

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ ४०॥

भावार्थ—हे नाथ श्रीहनुमान्‌जी! तुलसीदास सदा-सर्वदाके लिये श्रीहरि (भगवान् श्रीराम)-का सेवक है। ऐसा समझकर आप उसके हृदय-भवनमें निवास कीजिये।

व्याख्या—श्रीहनुमानचालीसामें श्रीहनुमान्‌जीकी स्तुति करनेके बाद इस चौपाईमें

श्रीतुलसीदासजीने उनसे अन्तिम वरदान माँग लिया है कि हे हनुमान्‌जी! आप मेरे हृदयमें सदैव निवास करें।

दोहा—**पवनतनय संकट हरन मंगल मूरति रूप।**
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप॥ २॥

भावार्थ—हे पवनसुत श्रीहनुमान्‌जी! आप सारे संकटोंको दूर करनेवाले हैं तथा साक्षात् कल्याणकी मूर्ति हैं। आप भगवान् श्रीरामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी और माता सीताजीके साथ मेरे हृदयमें निवास कीजिये।

व्याख्या—भक्तके हृदयमें भगवान् रहते ही हैं। इसलिये भक्तको हृदयमें विराजमान करनेपर प्रभु स्वतः विराजमान हो जाते हैं। श्रीहनुमान्‌जी भगवान् रामके परम भक्त हैं। उनसे अन्तमें यह प्रार्थना की गयी है कि प्रभुके साथ मेरे हृदयमें आप विराजमान हों।

बिना श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीताजीके श्रीहनुमान्‌जीका स्थायी निवास सम्भव भी नहीं है। इन चारोंको हृदयमें बैठानेका तात्पर्य चारों पदार्थोंको एक साथ प्राप्त करनेका

है। चारों पदार्थोंसे तात्पर्य ज्ञान (राम), विवेक (लक्ष्मण), शान्ति (सीताजी) एवं सत्संग (हनुमान्‌जी)-से है।

सत्संगके द्वारा ही ज्ञान, विवेक एवं शान्तिकी प्राप्ति होती है। यहाँ श्रीहनुमान्‌जी सत्संगके प्रतीक हैं। अतः श्रीहनुमान्‌जीकी आराधनासे सब कुछ प्राप्त हो सकता है।